बौद्ध दर्शन के प्रथम आर्यसत्य की विवेचना B.A.I. Philosophy (Hons)
(Discuss The First noble truth of Buddhism) 1st paper.

बुद्ध के चार आर्यसत्यों में प्रथम आर्यसत्य में दुःख की उपस्थिति का वर्णन हुआ है। "दुःख है" यह बुद्ध का प्रथम आर्यसत्य है। इसकी सत्यता में किसी भी व्यक्ति द्वारा संदेह नहीं किया जा सकता। इसकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है। इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। इस सत्य के अनुसार विश्व दुःखों से परिपूर्ण है। जीवन का कोई भी दौर दुःखरहित नहीं है। "दीघनिकायसुत्त" में कहा गया है कि "जन्म दुःख है, पतन दुःख है, रोग दुःख है, दुःख दुःख है, स्वयं मृत्यु जिसे हम नहीं चाहते, उसकी प्राप्ति दुःख है, प्रियजनों से वियोग दुःख है, इच्छा की पूर्ति न होना दुःख है। शरीर, वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञान जिसे पंचस्कंध कहा जाता है, जो कि आसक्ति से उत्पन्न है। आसक्ति दुःख है। इसी प्रकार जन्म, मन की खिन्नता, बीमारी, बुढ़ापा तथा मृत्यु सभी दुःखद हैं। दुःख के अनेक प्रकार हैं, किन्तु इनमें से दो अधिक भयानक हैं। ये हैं "जरा" (बुढ़ापा) और "मृत्यु"। इसी कारण बुद्ध ने विभिन्न प्रकार के दुःखों को "जरामरण" के नाम से पुकारा है। इस प्रकार बुद्ध ने पाया कि संपूर्ण विश्व दुःखों से परिपूर्ण है एवं जीवन में सर्वत्र दुःख ही दुःख है। बुद्ध के अनुसार वस्तुतः सुख भी दुःख मिश्रित है। मनुष्य को सुख की कामना तभी होती है जब उसे किसी अभाव की अनुभूति होता है। अभाव की अनुभूति स्वयं अपने आप में दुःख है। मनुष्य सुख की प्राप्ति भी सहज नहीं कर पाता, उसके लिए उसे स्वयं अनेकों कठिनाइयों तथा कष्टों को सहना पड़ता है। निष्कर्षतः सुख की प्राप्ति भी दुःखदायी है। अगर सुख की प्राप्ति हो भी जाय, तो उसे बचाये रखने में मनुष्य सदैव प्रयासरत तथा चिंचित रहता है। इसके खोने का भय मनुष्य को कभी भी चैन से नहीं रहने देता। एवं इसके नष्ट हो जाने पर मनुष्य को अपार दुःख होता है। दूसरे शब्दों में मनुष्य को विशुद्ध सुख कभी भी प्राप्त नहीं होता। दुःखरहित सुख कल्पना मात्र प्रतीत होता है।

बौद्ध दर्शन क्षणिकवाद में विश्वास करता है जिसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तुएँ क्षणभंगुर हैं। संसार की कोई भी वस्तु स्थायी तथा नित्य नहीं है। इसके नष्ट होने पर मानव दुःखी होता है। परिवर्तन प्रकृति का

नियम है। इस प्रकार क्षणिकवाद का सिद्धान्त भी दुःख के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। बुद्ध का कथन था कि "विश्व के दुःखियों ने जितना आँसू बहाए हैं उनका पानी महासागर के जल से भी अधिक है।

चार्वाक के सिवा सभी भारतीय दार्शनिकों ने बुद्ध के इस प्रथम आर्यसत्य की प्रामाणिकता को स्वीकार किया है। चार्वाक के सिवा अन्य सभी भारतीय विचारक दुःख की व्यापकता में विश्वास रखते हैं तथा मोक्ष (दुःखरहित अवस्था) को जीवन का चरम आदर्श स्वीकार करते हैं।

बुद्ध के प्रथम आर्यसत्य का समर्थन पाश्चात्य विचारक शापेनहावर के दर्शन में मिलता है। शापेनहावर ने भी स्वीकार किया है कि जीवन दुःखमय है। इनके अनुसार विश्व अन्य सभी संभव विश्वों से बदतर है। कुछ लोग बुद्ध तथा शापेनहावर के विचारों समानता को देखते हुए बुद्ध को भी शापेनहावर की भाँति निराशावादी घोषित करने का प्रयास करते हैं किन्तु यह आरोप अथवा आक्षेप सर्वथा अग्राह्य है। बुद्ध का दर्शन निराशावाद से अवश्य प्रारम्भ होता है किन्तु उसका अंत निराशावाद में नहीं होता। दुःखों का अस्तित्व स्वीकार कर ही बुद्ध रुक नहीं गये। वे अन्ततः प्रथम आर्यसत्य के अलावे अन्य तीन आर्यसत्य की स्थापना की तथा दुःख निरोध के मार्ग को ढूंढ लिया। इस प्रकार उन्होंने स्वयं को निराशावादी होने से बचा लिया। उन्होंने दुःखों को दूर का ~~का~~ मार्ग बताया जिसे "अष्टांगिक मार्ग" कहा गया। इस मार्ग पर चलकर मनुष्य दुःखों से पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इसे निर्वाण की अवस्था कहते हैं। निर्वाण की प्राप्ति इस जीवन में भी की जा सकती है। बुद्ध स्वयं इसके उदाहरण हैं। अब यदि हम बुद्ध के इस प्रथम आर्यसत्य

में निहित व्यावहारिकता की बात करें तो पाएंगे कि बुद्ध का जीवन के इस दुःख पर इतना जोर देना सप्रयोजन तथा कल्याणमय था। इसमें उनका एक ही उद्देश्य था, लोग इस तथ्य के प्रति सचेत हों। वे उसे दूर करने के मार्ग पर चलें। दूसरी बात ज्यों ही हम जान जाते हैं कि जीवन में दुःख ही दुःख है तो उस जीवन के लिए पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है, जहाँ दुःख का सर्वथा अभाव है। बुद्ध ने इस प्रथम आर्य सत्य द्वारा वो पृष्ठभूमि तैयार करने की कोशिश की है।

डा० सन्तोष कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र,
अनजीत सिंह महा०,
विक्रमगंज (रोहतास)।
दिनांक: